॥ श्री महालक्ष्मीची आरती ॥

जय देवी जय देवी जय महालक्ष्मी।

वससी व्यापकरुपे तू स्थूलसूक्ष्मी॥

करवीरपुरवासिनी सुरवरमुनिमाता।

पुरहरवरदायिनी मुरहरप्रियकान्ता।

कमलाकारें जठरी जन्मविला धाता।

सहस्रवदनी भूधर न पुरे गुण गातां॥

जय देवी जय देवी...॥

मातुलिंग गदा खेटक रविकिरणीं।

झळके हाटकवाटी पीयुषरसपाणी।

माणिकरसना सुरंगवसना मृगनयनी।

शशिकरवदना राजस मदनाची जननी॥

जय देवी जय देवी...॥

तारा शक्ति अगम्या शिवभजकां गौरी।

सांख्य म्हणती प्रकृती निर्गुण निर्धारी।

गायत्री निजबीजा निगमागम सारी।

प्रगटे पद्मावती निजधर्माचारी॥

जय देवी जय देवी...॥

अमृतभरिते सरिते अघदुरितें वारीं।

मारी दुर्घट असुरां भवदुस्तर तारीं।

वारी मायापटल प्रणमत परिवारी।

हें रुप चिद्रूप दावी निर्धारी॥

जय देवी जय देवी...॥

चतुराननें कुश्चित कर्मांच्या ओळी।

लिहिल्या असतिल माते माझे निजभाळी।

पुसोनि चरणातळी पदसुमने क्षाळी।

मुक्तेश्वर नागर क्षीरसागरबाळी॥

जय देवी जय देवी...॥

Mahalakshmi Aarti Lyrics English

॥ Shri Mahalakshmichi Aarti ॥

Jai Devi Jai Devi Jai Mahalakshmi।

Vasasi Vyapakarupe Tu Sthulasukshmi॥

Karvirpurvasini Survarmunimata।

Puraharavaradayini Muraharapriyakanta।

Kamalakare Jathari Janmavila Dhata।

Sahasravadani Bhudhara Na Pure Guna Gata॥

Jai Devi Jai Devi…॥

Matulinga Gada Khetaka Ravikirani।

Jhalake Hatakavati Piyusharasapani।

Manikarasana Surangavasana Mriganayani।

Shashikaravadana Rajasa Madanachi Janani॥

Jai Devi Jai Devi…॥

Tara Shakti Agamya Shivabhajaka Gauri।

Sankhya Mhanati Prakriti Nirguna Nirdhari।

Gayatri Nijabija Nigamagama Sari।

Pragate Padmavati Nijadharmachari॥

Jai Devi Jai Devi… ॥

Amritabharite Sarite Aghadurite Vari ।

Mari Durghata Asura Bhavadustara Tari ।

Vari Mayapatala Pranamata Parivari ।

He Rupa Chidrupa Davi Nirdhari ॥

Jai Devi Jai Devi… ॥

Chaturanane Kushchita Karmanchya Oli ।

Lihilya Asatila Mate Majhe Nijabhali ।

Pusoni Charanatali Padasumane Kshali ।

Mukteshwara Nagara Kshirasagarabali ॥

Jai Devi Jai Devi… ॥

|| श्री लक्ष्मी जी की आरती ||

ॐ जय लक्ष्मी माता मैया जय लक्ष्मी माता।

तुमको निसिदिन सेवत २ हर विष्णु धाता।। 01

उमा, रमा, ब्रह्माणी तुम ही जग माता।

सूर्य, चन्द्रमा. ध्यावत २ नारद ऋषि गाता।। ॐ।।

दुर्गारूप निरंजनि सुख सम्पति दाता।

जो कोई तुमको ध्यावत २ ऋषि-सिधि-धनपाता।। ॐ ।।

तुम पाताल निवासिनि तुम ही शुभदाता।

कर्म-प्रभाव प्रकाशिनि २ भवनिधि की त्राता।। ॐ।।

जिस घर तुम रहती, तह-सबु सद्गुण आता।

सब संभव हो जाता २ मन नहिं घबराता ।। ॐ।।

तुम बिन यज्ञ न होते वस्त्र न हो राता।

खान-पान का वैभव २ सब तुमसे आता।। ॐ।।

शुभ-गुण-मन्दिर, सुन्दर-क्षीरोदधि जाता।

रत्न चतुर्दश तुम बिन २ कोई नहिं पाता।।

महालक्ष्मी (जी) की आतरी जो कोई नर गाता।

उर आनन्द समाता २ पाप उत्तर जाता।। ॐ।।

**

*